मिंग-लो ने पहाड़ हिलाया

अर्नोल्ड लोबेल

मिंग-लो ने पहाड़ हिलाया

अर्नोल्ड लोबेल

मिंग-लो और उसकी पत्नी एक बड़े पहाड़ की तलहटी में बसे अपने घर में रहते थे. उन्हें अपने घर से प्यार था लेकिन पहाड़ से नहीं.
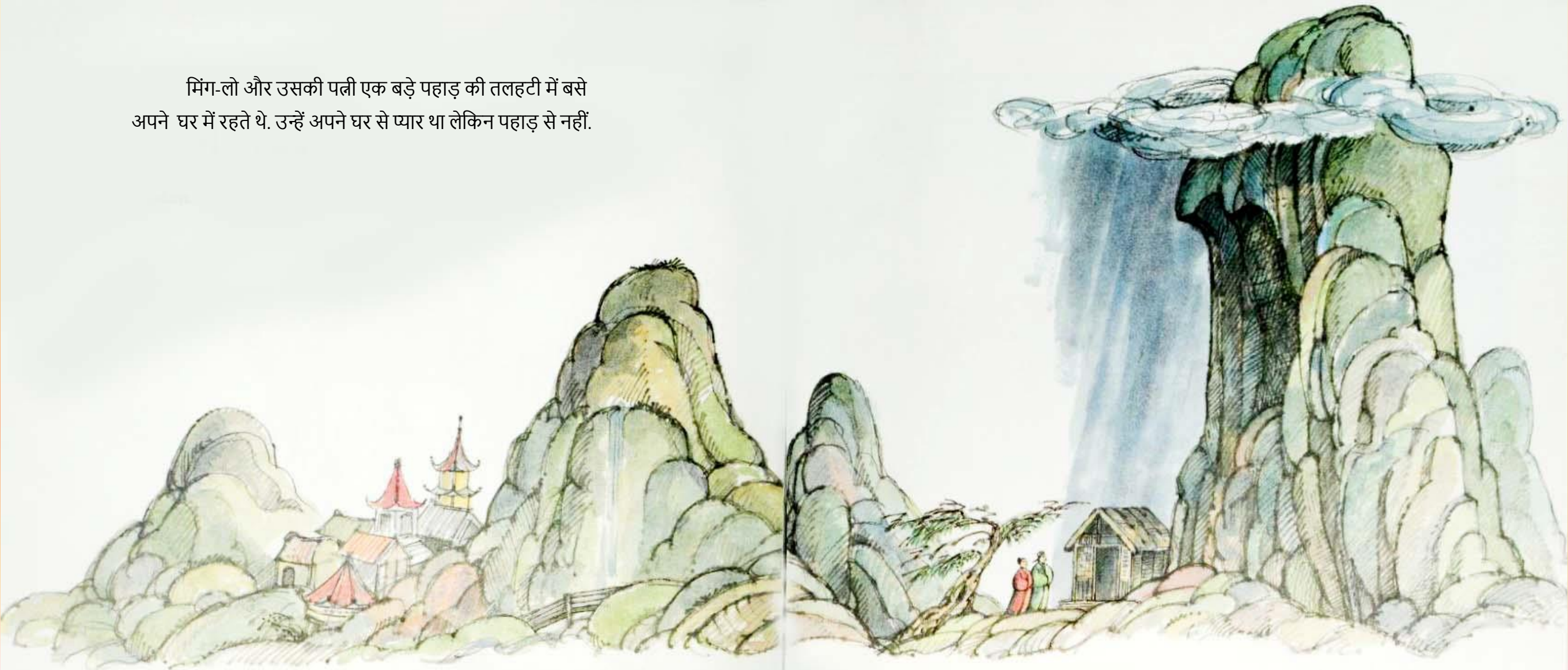
उस पहाड़ से अक्सर चट्टानें और पत्थर गिरते थे. वे आकर मिंग-लो के घर पर आकर गिरते थे. इसलिए घर की छत में छेद हो गए थे. पहाड़ की चोटी के बादल बारिश करते थे. बारिश, छेदों से होकर मिंग-लो की घर में गिरती थी. इसलिए घर के अंदर के कमरों में हमेशा सीलन रहती थी और लगातार पानी टपकता था.

जब सूरज चमकता था, तो भी वो मिंग-लो के घर को कभी गर्म नहीं करता था. उसके घर पर हमेशा पहाड़ की काली परछाई छाई रहती थी. उसके बगीचे में फूल और सब्जियां भी नहीं उगती थीं.
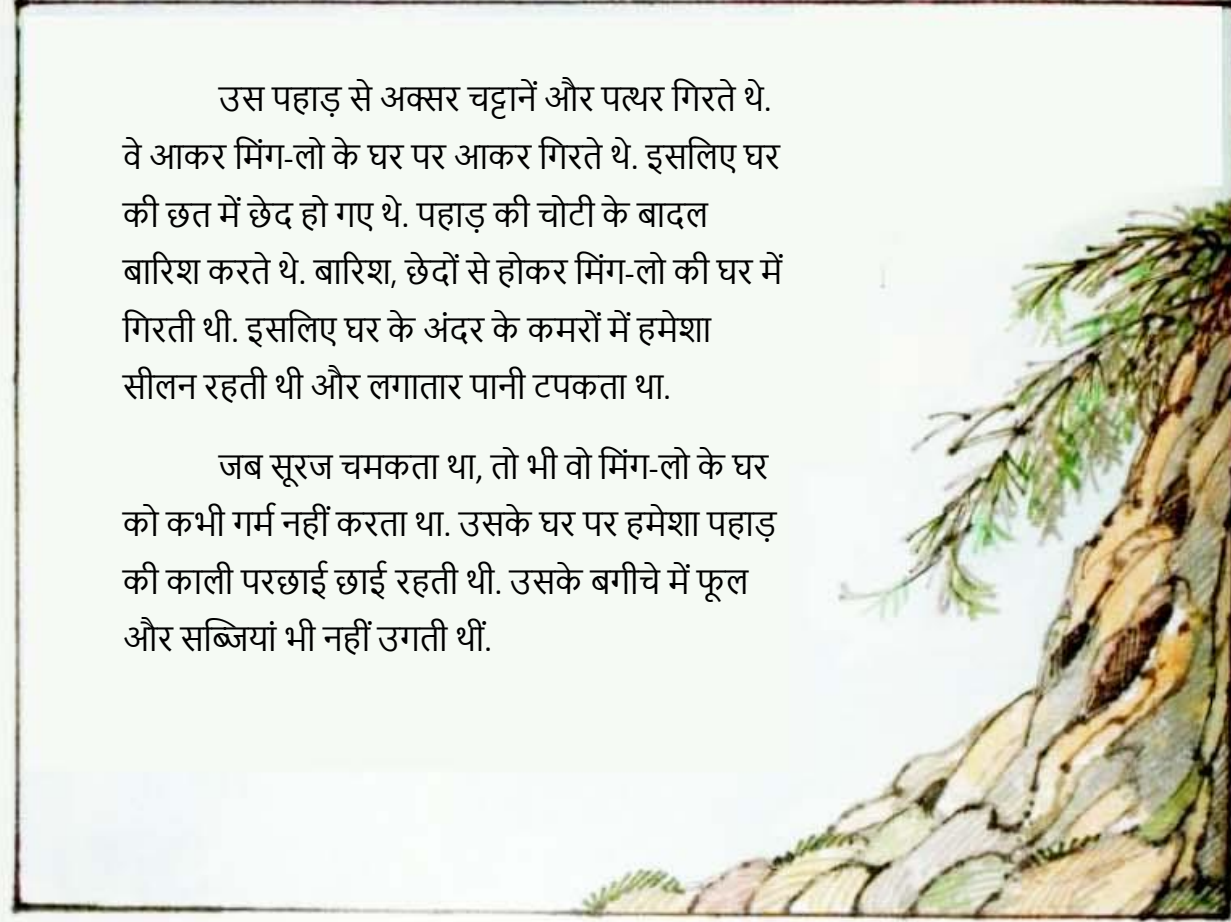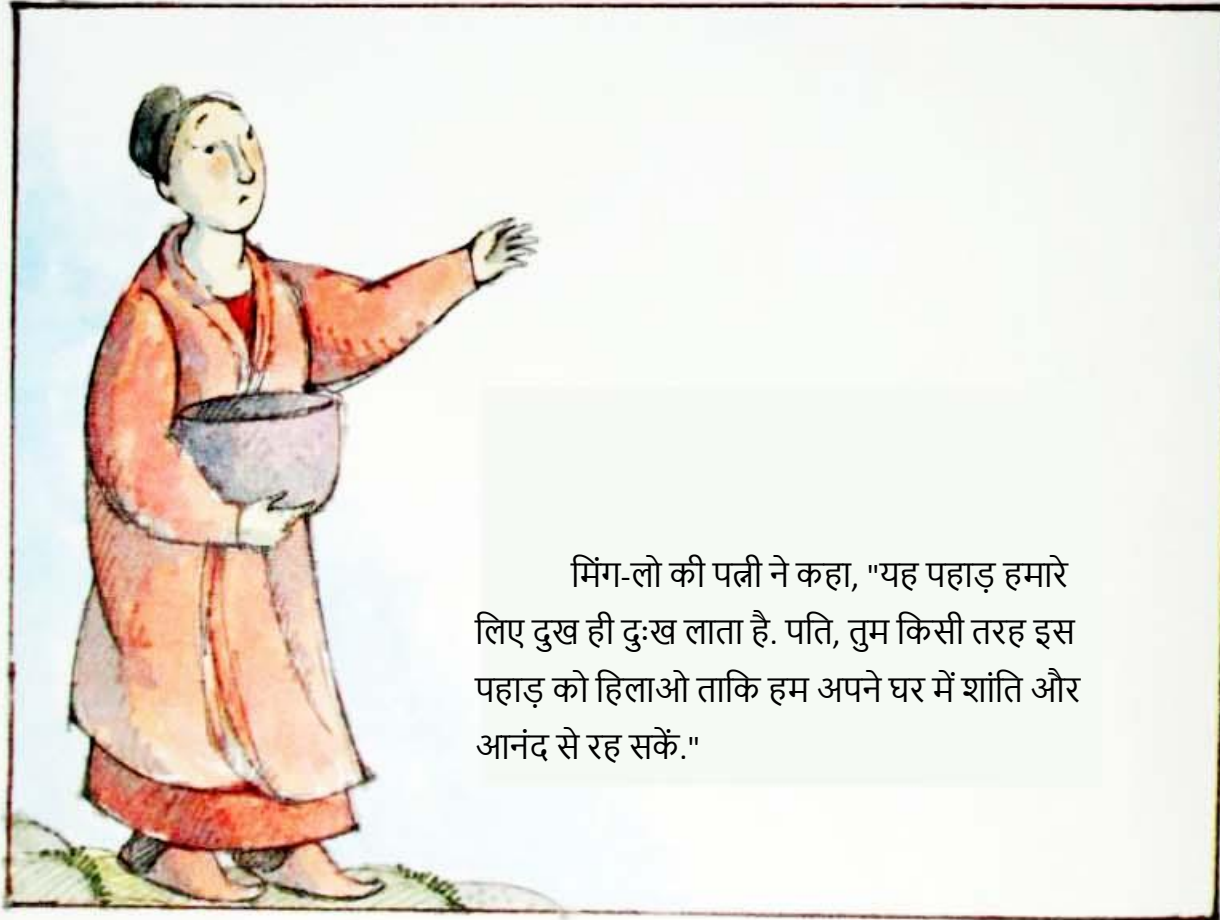
मिंग-लो की पत्नी ने कहा, "यह पहाड़ हमारे लिए दुख ही दुःख लाता है. पति, तुम किसी तरह इस पहाड़ को हिलाओ ताकि हम अपने घर में शांति और आनंद से रह सकें."

"मेरी प्यारी पत्नी," मिंग-लो ने कहा, "मेरे जैसा छोटा आदमी भला इस बड़े पहाड़ को कैसे हिला सकता है?"

"मुझे क्या पता?" उसकी पत्नी ने कहा. "देखो, हमारे गाँव में एक बुद्धिमान व्यक्ति रहता है. जाकर उससे पूछो."

फिर मिंग-लो गांव की ओर तेजी से गया. जब उसे वो बुद्धिमान मिला, तो उसने कहा, "ज़नाब, मैं अपने घर के पास के पहाड़ को हिलाना चाहता हूँ."

बुद्धिमान व्यक्ति बहुत देर तक सोचता रहा. वो पाइप पी रहा था और उससे धुंआ निकल रहा था.

अंत में, उसने कहा, "अपने घर जाओ, मिंग-लो. तुम्हें जो सबसे ऊंचा और सबसे मोटा पेड़ दिखे उसे काटो. और फिर उस पेड़ को अपनी पूरी ताकत लगाकर पहाड़ के किनारे पर धकेलो. इस तरह से तुम पहाड़ को हिला पाओगे."

मिंग-लो अपने घर भागा. उसे जो सबसे ऊंचा और सबसे मोटा पेड़ दिखा उसने उसे काटा. फिर मिंग-लो और उसकी पत्नी ने पेड़ को कसकर पकड़ा. वे जितनी तेजी से दौड़ सकते थे दौड़े, और उन्होंने पेड़ को पहाड़ के किनारे पर धकेला.
पेड़ आधे में टूट गया. उस धक्के से मिंग-लो और उसकी पत्नी अपने-अपने सिर के बल गिरे. पर पहाड़ एक इंच भी नहीं हिला.
"देखो, तुम उस बुद्धिमान व्यक्ति के पास वापस जाओ," मिंग-लो की पत्नी ने कहा. "उससे पहाड़ को हिलाने का दूसरा तरीका सोचने को कहो."

बुद्धिमान आदमी ने फिर बहुत देर तक सोचा. उसके पाइप से धुंआ निकलता रहा.

अंत में, उसने कहा, "मिंग-लो अपने घर वापिस जाओ. अपनी रसोई से थाली और कढ़ाई लो. अपने एक हाथ में एक चमचा पकड़ो. उस चमचे से जितनी ज़ोर से हो थाली और कढ़ाई को पीटो. फिर साथ में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाओ. उस शोर से पहाड़ डर जाएगा. इस तरह से तुम पहाड़ को हिला पाओगे."

मिंग-लो घर भागा. उसने अपनी रसोई से बर्तन और चमचे लिए. मिंग-लो और उनकी पत्नी ने अपने चारों हाथों में चमचे और बर्तन पकड़े. वे ज़ोर-ज़ोर से चीखे और चिल्लाए. उन्होंने थाली और कढ़ाई को भी चमचों से ज़ोर-ज़ोर पीटा.

उन्होंने बहुत शोर मचाया. उस शोर से पेड़ों से पक्षियों के झुंड उड़ गए, लेकिन पहाड़ बिल्कुल नहीं हिला.

"तुम बुद्धिमान व्यक्ति के पास दुबारा वापस जाओ," मिंग-लो की पत्नी चिल्लाई. "हमें पहाड़ को हिलाने का कोई-न-कोई रास्ता खोजना ही होगा!"
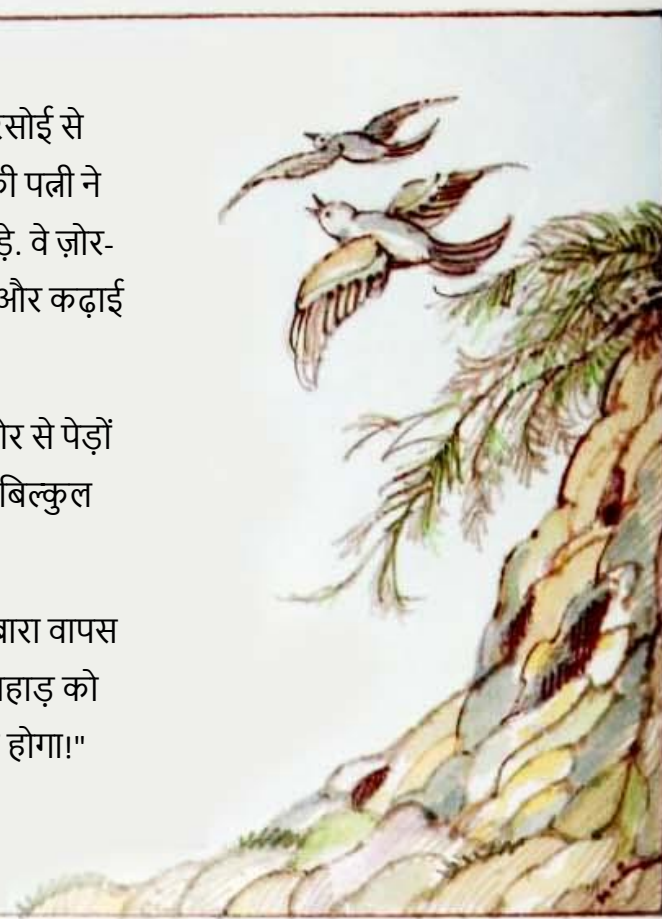
मिंग-लो ने देखा कि इस बार बुद्धिमान व्यक्ति बहुत देर तक सोचता रहा. उसके पाइप से धुएं के गुबार उठने लगे.

अंत में, उसने कहा, "घर जाओ, मिंग-लो. कुछ केक और पकवान बनाओ. उन्हें पहाड़ की चोटी पर रहने वाली आत्मा के पास लेकर जाओ. वो आत्मा हमेशा भूखी रहती है वो तुम्हारी भेट पाकर प्रसन्न होगी. फिर वो तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगी. इस तरह तुम पहाड़ को हिला पाओगे."

मिंग-लो घर भागा. अपनी पत्नी के साथ, उसने ढेर सारे केक और पकवान बनाए. फिर उन्हें लेकर दोनों पहाड़ की चोटी की खड़ी चढ़ाई पर चढ़े जहां आत्मा रहती थी.

तेज हवा से जूझते हुए वे ऊंची चट्टानों पर चढ़े. तेज़ हवा सीटी बजा रही थी और ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रही थी.

जल्द ही तेज़ हवा सभी केक और पकवानों को उड़ाकर ले गई. फिर आत्मा के लिए कुछ भी भोजन नहीं बचा और इसलिए पहाड़ बिलकुल नहीं हिला.

इस बार पत्नी के आदेश की प्रतीक्षा किए बिना, मिंग-लो जल्दी से बुद्धिमान व्यक्ति के पास वापस भागा.

"इस पहाड़ को हिलाने में मेरी मदद करो ताकि मैं अपने घर में शांति का आनंद ले सकूं!" मिंग-लो रोया.

बुद्धिमान व्यक्ति बहुत देर तक गहरे विचार में बैठा रहा. अब उसके पाइप से इतना धुंआ निकल रहा था कि वो मुश्किल से ही दिखाई दे रहा था.

अंत में, उसने कहा, "घर जाओ, मिंग लो. अपने घर को अलग-अलग करो, सभी लकड़ियों को अलग-अलग करो. उन सभी बांसों को इकट्ठा करो जिनसे तुम्हारा घर बना था. फिर अपने घर की सभी चीजों को इकट्ठा करो. उन्हें रस्सी से बंडलों में बांधों. फिर उन बंडलों को अपने सिर पर रखकर उन्हें अपने हाथों में उठाओ. फिर पहाड़ की ओर अपना मुंह करके अपनी आँखें बंद करो.

"यह सब करने के बाद," बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा, "तुम हिलते हुए पहाड़ का नृत्य करना. पहले अपने बाएं पैर को पीछे रखना, फिर अपने दाहिने पैर को बाएं के पीछे रखना. इस तरह अपने दाएं-बाएं पैर को एक-दूसरे के पीछे रखते हुए पीछे की ओर चलना. तुम्हें इस नृत्य को कई घंटों तक बार-बार करना होगा. फिर जब जब तुम अपनी आंखें खोलोगे तो तुम देखोगे कि पहाड़ तुमसे बहुत दूर चला गया होगा."

"यह एक अजीब नृत्य है," मिंग-लो ने कहा, "लेकिन अगर वो पहाड़ को हिलाता है, तो मैं वो तुरंत करूंगा."

मिंग-लो घर भागा. उसने अपने घर को अलग-अलग किया. उसने सब बांसों और बल्लियों को अलग-अलग किया. फिर उसने सब लकड़ियाँ इकट्ठी कीं और घर का बाकी सब सामान भी इकट्ठा किया.

मिंग-लो और उसकी पत्नी ने रस्सी से अब सामान को बंडलों में बाँधा. उन्होंने बंडलों को अपनी बाहों में और अपने सिर पर रखा.

उसके बाद मिंग-लो ने अपनी पत्नी को हिलते हुए पहाड़ का नृत्य करना दिखाया. फिर दोनों ने पहाड़ की ओर अपना मुंह किया और अपनी आँखें बंद कीं. वे ध्यान से अपने पैरों से नृत्य करते रहे.
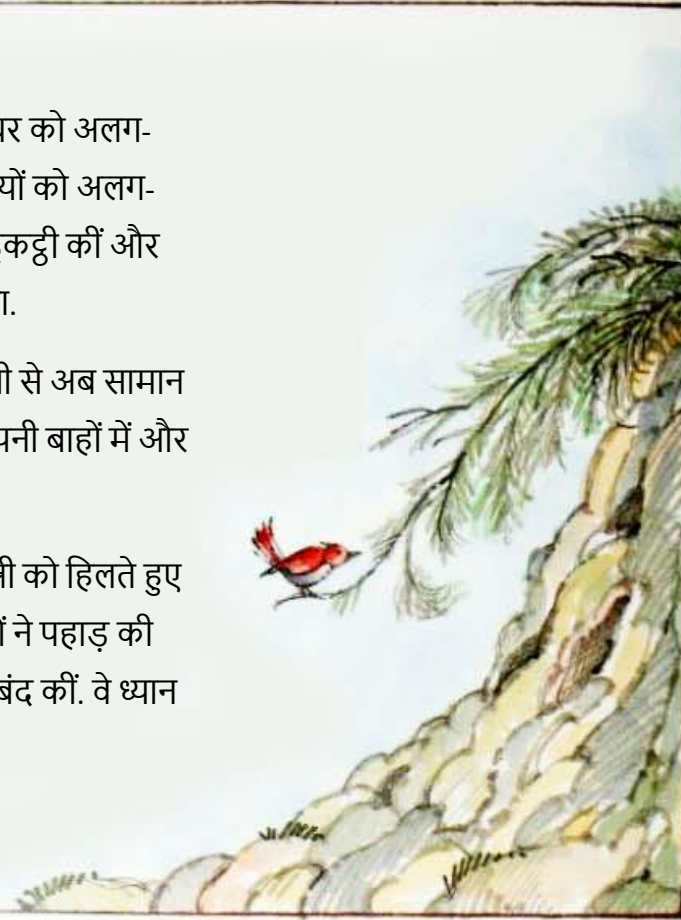
पहले प्रत्येक ने अपना बायाँ पैर दाएं पैर के पीछे रखा. फिर उन्होंने अपना दायां पैर उस स्थान पर रखा जहाँ पहले उनका बाएं पैर था.

पड़ोसियों ने मिंग-लो और उसकी पत्नी को अपनी सारे सामान के साथ खेतों में पीछे की ओर जाते हुए देखा.

वो एक अजीब नजारा था और सभी लोग उन्हें आश्चर्य से देखते रहे.
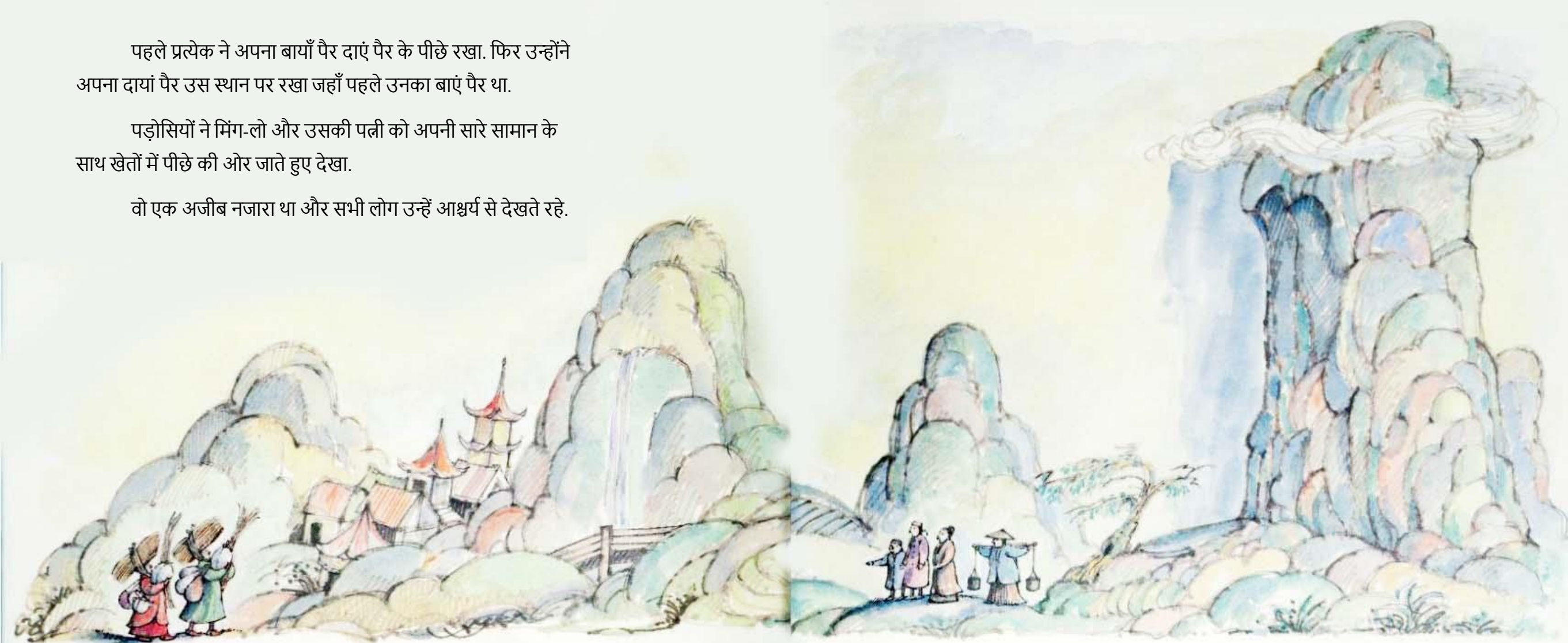
कई घंटे बीत जाने के बाद, मिंग-लो और उसकी पत्नी ने अपनी आँखें खोलीं.

"देखो," मिंग-लो चिल्लाया, "हमारे नृत्य ने अपना काम किया है! पहाड़ अब हमसे बहुत दूर चला गया है!"

उसके बाद बांस और बल्लियों से उन्होंने अपना घर दुबारा बनाया. उन्होंने अपना सारा सामान खोला और उसे अपने घर में सजाया.

मिंग-लो और उसकी पत्नी ने अपना बाकी जीवन खुले आसमान और गर्म धूप के नीचे गुजारा. जब बारिश हुई, तो वो एक ऐसी छत पर गिरी जिसमें कोई छेद नहीं था.

अब वे अक्सर उस पहाड़ को देखते थे जो दूरी पर खड़ा कुछ छोटा दिखता था. पर उनके दिलों में खुशी थी क्योंकि वे दोनों जानते थे कि उन्होंने पहाड़ को हिलाया था.

समाप्त